आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-33, अंक-3

मार्च, 2019

इस अंक में

- परम पावन दलाई लामा के कर कमलों द्वारा *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* के संग्रहणीय अंक का विमोचन 13
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में 'गांधी और स्वास्थ्य @150' विषय पर दो–दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 14
- जालोर, राजस्थान में आयोजित 'म्हारो राजस्थान 2019' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी 22
- आई सी एम आर–क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, गोरखपुर में 'बायोमेडिकल संचार' पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित 23
- फरीदाबाद में आयोजित एक्स्पो में परिषद की भागीदारी 24
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 24
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी 26

संपादक मंडल

अध्यक्ष — **प्रो. बलराम भार्गव**
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान
अनुसंधान परिषद

उपाध्यक्ष — **डॉ चन्द्र शेखर**
अपर महानिदेशक

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — **डॉ नीरज टण्डन**

संपादक — **डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय**

प्रकाशक — **श्री जगदीश नारायण माथुर**

परम पावन दलाई लामा के कर कमलों द्वारा *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* के संग्रहणीय अंक का विमोचन

महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती के संस्मरण में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) ने *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* (*आई जे एम आर*) का एक संग्रहणीय अंक प्रकाशित किया है जो स्वास्थ्य के संदर्भ में महात्मा गांधी के सिद्धातों पर केन्द्रित है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) द्वारा नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर मुख्यालय में दिनांक 25–26 मार्च, 2019 के दौरान *'गांधी ऐण्ड हेल्थ @150'* शीर्षक से आयोजित एक दो दिवसीय संगोष्ठी से पूर्व 'गांधी ऐण्ड हेल्थ @150' शीर्षक से *आई जे एम आर* के इस संग्रहणीय अंक का विमोचन दिनांक 20 मार्च, 2019 को धर्मशाला में तिब्बत के सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु एवं नोबल शान्ति विजेता परम पावन दलाई लामा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

आई जे एम आर के इस विशेष संस्करण में महात्मा गांधी की चिकित्सीय स्थिति, उनकी स्वास्थ्य प्रोफाइल और स्वास्थ्य पर उनके द्वारा किए गए प्रयोगों का विस्तृत विवरण है, जो प्रकाशित लेखों और उनके स्वास्थ्य के संबंध में उपलब्ध अभिलेखों पर आधारित है। इसमें महात्मा गांधी के सिद्धातों के प्रति प्रासंगिक क्षेत्रों में आई सी एम आर

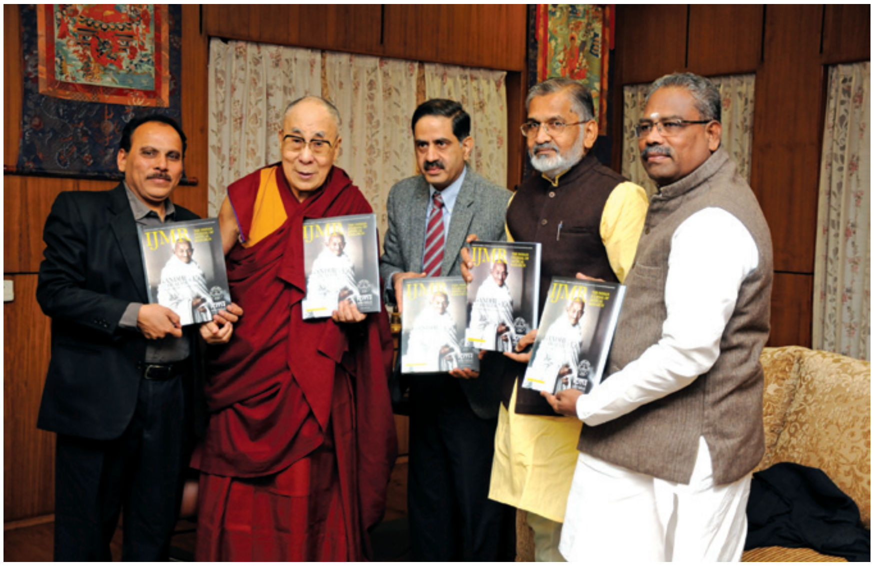

परम पावन दलाई लामा के कर कमलों द्वारा 'गांधी ऐण्ड हेल्थ @150' शीर्षक से आई जे एम आर के अंक का विमोचन। साथ में बाएं से डॉ रजनी कान्त, प्रो. बलराम भार्गव, डॉ अभय बांग एवं श्री ए. अन्नामलाई।

के योगदानों का भी वर्णन है जैसे कि–स्वास्थ्य एवं सफाई का महत्व (हैज़ा, मलेरिया, क्षयरोग और कुष्ठरोग जैसे रोगों के प्रति प्रासंगिक), अनुशासित जीवन जीना और प्राणायाम (जीवन शैली से जुड़े रोगों, मानसिक स्वास्थ्य और युवा के प्रति प्रासंगिक) के साथ शारीरिक तंदुरुस्ती और संतुलित आहार (पोषण के प्रति प्रासंगिक) की भूमिका। इस अंक में यह भी वर्णन है कि आई सी एम आर ने कैसे अपने शोध कार्य को उन क्षेत्रों में केन्द्रित किया है जिसके प्रति महात्मा गांधी बहुत अधिक रुचि रखते थे–जैसे कि पर्यावरण, जीवन शैली से जुड़े रोग और सामाजिक व्यवहार। इस अंक में महात्मा गांधी

परम पावन दलाई लामा के आशीर्वचनों को सुनते हुए प्रो. बलराम भार्गव एवं दल के अन्य सदस्यगण।

के सिद्धान्तों को मूर्त रूप देने के अनुरूप स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की प्रगति का चित्रण है।

आई जे एम आर के इस अंक का विमोचन करते हुए परम पावन दलाई लामा ने कहा कि ''महात्मा गांधी विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण एक महान व्यक्ति थे। समाज की समस्याओं का हल ढूंढने तथा सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व करने के प्रति उनकी प्रेरणा उनके शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य द्वारा प्रेरित थी। गांधी जी के जीवन से हमें दिखाई देता है कि अपना जीवन दूसरों की सेवा में समर्पित करने वाला व्यक्ति शारीरिक और भावनात्मक रूप से ताकतवर बनता है। उन्होंने यह भी कहा कि ''स्वास्थ्य के प्रति गांधी जी के दर्शन को विशेष सम्मान प्रदर्शित करना न केवल लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने पर वर्तमान समाज को अवगत कराना होगा बल्कि उन्हें एक अनुशासित और आनन्दप्रद जीवन अपनाने की विचार धारा को आत्मसात करने में भी सहायक होगा।

परम पावन दलाई लामा के कर कमलों द्वारा *आई जे एम आर* के इस विशेष अंक के विमोचन के अवसर पर स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव; गढ़चिरोली स्थित *सोसाइटी फॉर एजूकेशन, ऐक्शन ऐण्ड रिसर्च इन कम्युनिटी हेल्थ* के संस्थापक निदेशक डॉ अभय बांग; नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के निदेशक डॉ ए. अन्नामलाई; एन डी टी वी इंडिया समाचार चैनेल के विज्ञान सम्पादक डॉ पल्लव बागला; तथा आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रजनी कान्त उपस्थित थे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में 'गांधी और स्वास्थ्य @150' विषय पर दो–दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150वीं जयन्ती समारोहों के अन्तर्गत भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में दिनांक 25–26 मार्च, 2019 के दौरान 'गांधी और स्वास्थ्य @150' विषय पर एक दो–दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

इस संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में नीति आयोग के माननीय सदस्य डॉ वी.के. पॉल; विश्व स्वास्थ्य संगठन दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र की निदेशक डॉ पूनम खेत्रपाल सिंह; माननीय प्रधान मंत्री के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डॉ के. विजय राघवन; केन्द्रीय कपड़ा मंत्रालय के सचिव श्री राघवेन्द्र सिंह; केन्द्रीय पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय के सचिव श्री परमेश्वरन अय्यर; भारत में विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रतिनिधि डॉ हेंक बेकडम; बड़ी संख्या में सम्मानित अतिथिगण, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के संस्थानों के निदेशकगण, परिषद मुख्यालय के वैज्ञानिकगण, विभिन्न मीडिया के सदस्यगण आदि की उपस्थिति थी।

संगोष्ठी की शुरुआत में आई सी एम आर मुख्यालय में शोध प्रबंधन, नीति, नियोजन एवं समन्वयन प्रभाग के प्रमुख एवं वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रजनी कान्त ने इस आयोजन के विषय में जानकारी

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव द्वारा स्वागत उद्बोधन।

प्रदान की। उन्होंने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में महात्मा गांधी के सिद्धान्तों एवं मूल्यों के आधार पर भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित इसके 26 संस्थानों के माध्यम से जारी शोध कार्यों, और प्रमुख उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव ने सभागार में उपस्थित सभी सम्मानित अतिथियों, संगोष्ठी के वक्ताओं के साथ-साथ उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, मीडिया वर्ग के लोगों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए 'गांधी और आई सी एम आर' विषय पर प्रकाश डालते हुए स्वास्थ्य के संदर्भ में महात्मा गांधी के संकल्प, व्यवहार एवं उनके सुझावों का वर्णन किया। प्रो. भार्गव ने बताया कि ''वर्ष 1911 में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की स्थापना की गई थी। एक शताब्दी से अधिक अपनी इस यात्रा में इस संस्थान ने विभिन्न रोग नियंत्रण कार्यक्रमों में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं और लाखों भारतीयों के जीवन से जुड़कर महात्मा गांधी द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास किया है। महात्मा गांधी ने अपने देश में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तनों का नेतृत्व किया है और आई सी एम आर ने अपने स्वास्थ्य अनुसंधान में उनके मूल्यों और सिद्धान्तों को मूर्त रूप प्रदान किया है जिससे देश के लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सके। राष्ट्रपिता की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर देश में पूरे वर्ष भर आयोजित किए जाने वाले समारोहों के अन्तर्गत *आई सी एम आर* ने उस महान व्यक्ति की स्मृति के रूप में 'गांधी ऐण्ड हेल्थ @150' शीर्षक से आई जे एम आर के इस विशेष संस्करण का प्रकाशन किया है जिसने अपना जीवन गरीबों और पीड़ित लोगों की सेवा में न्योछावर कर दिया।

नीति आयोग के माननीय सदस्य डॉ वी. के. पॉल ने महात्मा गांधी की पुस्तक *'की टु हेल्थ'* का उदाहरण दिया जो इस प्रकार है ''यद्यपि यह सत्य है कि मनुष्य वायु और जल के बिना जीवित नहीं रह सकता परन्तु आहार शरीर को पोषण प्रदान करता है, इसलिए कहा जाता है कि आहार जीवन है''। डॉ पॉल ने व्यक्त किया कि ''गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुसार पोषक आहार उत्तम स्वास्थ्य की

नीति आयोग के माननीय सदस्य डॉ वी.के. पॉल द्वारा सम्बोधन।

कुंजी है, ये सिद्धान्त आई सी एम आर और नीति आयोग दोनों के द्वारा पोषण के क्षेत्र में किए गए शोध कार्यों को आधार प्रदान करते हैं। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि देश के सभी नागरिकों को पोषक आहार उपलब्ध हो सके''। डॉ पॉल ने एकीकृत चिकित्सा में शोध की दिशा में कार्य करने का सुझाव दिया।

इस अवसर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिण–पूर्व एशिया क्षेत्र की निदेशक डॉ पूनम खेत्रपाल सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए कि ''महात्मा गांधी ने भारतीय जन समूह को रोगों से बचाने और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का संदेश पहुंचाने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई। उनसे जुड़ी सभी बातों की तरह महात्मा गांधी के संदेश भी अत्यन्त सरल होते थे, फिर भी वे व्यापक रूप से अनुकरणीय रहे इस सामयिक अवसर पर प्रकाशित *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* का यह अंक स्वच्छता, संतुलित आहार और व्यायाम पर केन्द्रित स्वस्थ जीवन के गांधी जी के सिद्धान्तों पर आधारित है। महात्मा गांधी के इन सिद्धान्तों का अनुसरण किया जाए तो स्वस्थ भारत के सपने को एक लम्बे समय तक साकार रखा जा सकता है।''

विश्व स्वास्थ्य संगठन के नई दिल्ली स्थित दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र की निदेशक डॉ पूनम खेत्रपाल सिंह द्वारा सम्बोधन।

इस ऐतिहासिक अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डॉ के. विजय राघवन ने व्यक्त किया कि ''राष्ट्र के विकास के लिए नीतियां बनाने और लक्ष्यों को निर्धारित करने में

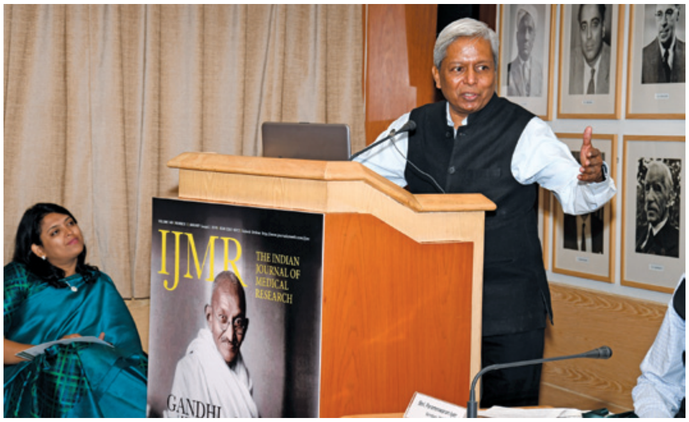

माननीय प्रधान मंत्री के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार डॉ के. विजय राघवन द्वारा सम्बोधन।

केन्द्रीय कपड़ा मंत्रालय के सचिव श्री राघवेन्द्र सिंह द्वारा सम्बोधन।

हमारे प्रयास राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धान्तों और उपदेशों पर आधारित होने चाहिए। *'गांधी ऐण्ड हेल्थ* @150' का प्रकाशन उसी दिशा में एक कदम है और इस पुस्तक को पढ़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर निःसन्देह एक अनुकूल प्रभाव पड़ेगा''।

इस दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र के उपरांत स्वास्थ्य के संदर्भ में गांधी दर्शन के अनुरूप विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर कुल पांच सत्र और 4 पैनेल चर्चा कार्यक्रम आयोजित किए।

इस संगोष्ठी के प्रथम दिन 'महात्मा गांधी की अर्न्तदृष्टि : स्वस्थ राष्ट्र की दिशा में गांधी के मूल्य और दर्शन' शीर्षक से प्रथम सत्र का आयोजन किया गया। 'स्वच्छता : स्वास्थ्य के प्रति सामाजिक सुधार' विषय पर अपने महत्वपूर्ण व्याख्यान में सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक एवं 'गांधी शान्ति पुरस्कार 2019' से सम्मानित डॉ बिन्देश्वर पाठक ने व्यक्त किया कि भारत में खुले में शौच की व्यापक समस्या को देखते हुए मैंने 'सुलभ इंटरनेशनल' की स्थापना

सभागार का दृश्य।

मंचासीन गणमान्य अतिथियों द्वारा 'गांधी ऐण्ड हेल्थ @150' का प्रदर्शन।

डॉ बिन्देश्वर पाठक द्वारा सम्बोधन।

की और देश भर में सुलभ शौचालय श्रृंखला निर्मित की गई, प्रधान मंत्री महोदय भी स्वच्छता पर गांधी दर्शन के अनुसरण में देश के नागरिकों से अपील की है कि स्वच्छता हमारा स्वभाव होना चाहिए जैसा कि स्वच्छता ही सेवा है। डॉ पाठक ने सुलभ बायोगैस प्रौद्योगिकी के माध्यम से ईंधन निर्माण और इसके प्रयोग, सुलभ इफ्लुएंट शोधन प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्वच्छ जल तैयार करने की भी जानकारी दी।

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ कुमार प्रशान्त ने अपने व्याख्यान में बताया महात्मा गांधी ने अपना सम्पूर्ण जीवन काल सत्य के प्रयोग पर ही समर्पित किया था। उन्होंने अपने आश्रम में श्री परचुरे शास्त्री और खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्वयं इलाज किया। डॉ प्रशान्त ने बताया कि ''महात्मा गांधी प्राकृतिक चिकित्सा को अत्यन्त प्रभावी मानते थे। गांधी जी ने वर्ष 1945 में पुणे में *नेचर क्योर हॉस्पिटल* के निर्माण में अपना पूर्ण योगदान दिया। वे एक लम्बे जीवन काल के लिए चिन्तित थे, परन्तु उनका मानना था कि लम्बा जिएं, स्वस्थ जिएं। गांधी जी अपने घर की साफ–सफ़ाई स्वयं करते थे। सुबह की सैर उनके जीवन का हिस्सा थी, यहां तक कि अक्सर वे सुबह की सैर के दौरान ही लोगों से मिलने और उनकी बातें सुनने के लिये समय देते थे। गांधी जी चाहते थे कि सरकार से दी जाने वाली सुविधाएं दूरस्थ राज्यों एवं गांवों के आखिरी व्यक्ति तक पहुंचे''।

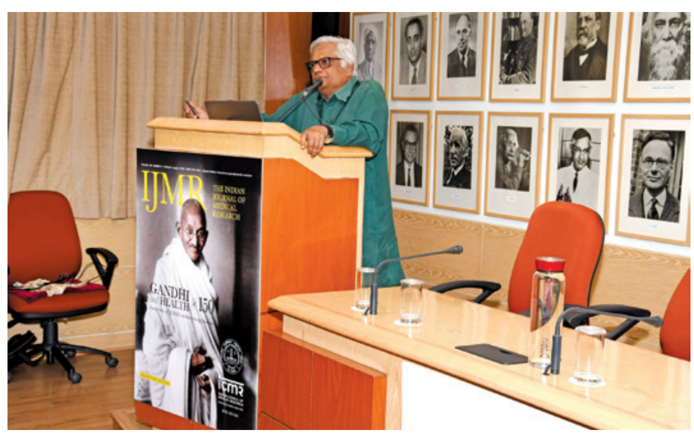

डॉ कुमार प्रशान्त द्वारा सम्बोधन।

अगला व्याख्यान अहमदाबाद स्थित *नेशनल इन्नोवेशन फाउण्डेशन* के संस्थापक निदेशक डॉ अनिल गुप्ता ने प्रस्तुत किया।

उन्होंने बताया कि गांवों में चिकित्सा पर होने वाला व्यय कम होता है। वहां हमें अध्ययन करने की आवश्यकता है कि कैसे हम अपने पारम्परिक ज्ञान के बल पर छोटी–मोटी बीमारियों पर चिकित्सक के बिना काबू पा सकते हैं। डॉ गुप्ता ने बताया कि चम्पारण, बिहार के एक गांव में मिडवाइफ़ ने बताया कि ''प्रसव प्रक्रिया बन्द अंधेरे कमरे में होनी चाहिए जिससे नवजात की आंखों में अचानक रोशनी पड़ने से बचाया जा सके। नाभि–नाल को प्रसव के तुरन्त बाद नहीं काटना चाहिए, क्योंकि प्रसव के पश्चात भी उसी के माध्यम से नवजात को पोषण प्राप्त होता रहता है।'' अब इस स्थानीय धारणा को वैज्ञानिक कसौटी पर कसने की आवश्यकता है अर्थात् इस तथ्य का मूल्यांकन शोध का विषय बन सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि कश्मीर के अनन्तनाग में लगभग सभी घरों के प्रांगण में क्यारियों में तरह–तरह की सब्जियां उगाने की प्रथा है। यही कारण है उस इलाके में बच्चे कुपोषित नहीं हैं। यह कुपोषण को समाप्त करने के प्रति गांधी दर्शन का ही एक हिस्सा है। डॉ गुप्ता के अनुसार मेडिकल छात्रों को समुदाय के लोगों से सम्पर्क करना चाहिए, उनकी स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों के विषय में चर्चा करनी चाहिए। उन्होंने यह भी सलाह दी कि देश के दूर–दराज ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के बेहतर स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्तर पर सस्ते नैदानिक उपकरण उपलब्ध कराने चाहिए।

डॉ अनिल गुप्ता द्वारा सम्बोधन।

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के गांधीवादी विद्वान और विज़िटिंग प्रोफेसर डॉ मार्क लिंडले ने अपने व्याख्यान में जोर दिया कि ''महात्मा गांधी ने स्वास्थ्य, स्वास्थ्य सुरक्षा, पोषण और स्वच्छता के संदर्भ में जो कुछ भी कहा उसका अपने दैनिक जीवन में अनुपालन किया। अतः, हमें अपने जीवन में महात्मा गांधी के बताए मार्गों का अनुसरण करना उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि होगी''।

उपर्युक्त व्याख्यानों के उपरांत ''भारत में स्वास्थ्य की स्थिति और गांधी'' विषय एक पैनेल चर्चा आयोजित की गई। इस चर्चा कार्यक्रम की अध्यक्षता गढ़चिरोली स्थित सोसाइटी फॉर एजूकेशन, ऐक्शन ऐण्ड़ रिसर्च इन कम्युनिटी हेल्थ (SEARCH) के निदेशक डॉ अभय बांग ने की। इस पैनेल चर्चा में प्रतिष्ठित स्वास्थ्य वैज्ञानिकों यथा–डॉ पी.एन. टण्डन, प्रतिष्ठित तंत्रिकाविज्ञानी;

पैनेल चर्चा के दौरान मंचासीन बाएं से डॉ अभय बांग, डॉ मंजू शर्मा, डॉ विश्व मोहन कटोच एवं प्रो. पी.एन. टण्डन

डॉ वी.एम. कटोच, पूर्व सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक आई सी एम आर तथा डॉ मंजू शर्मा, पूर्व सचिव, जैवप्रौद्योगिकी विभाग की उपस्थिति थी।

डॉ पी. एन. टण्डन के अनुसार हमें किसी विशेष स्वास्थ्य कार्यक्रम की व्यवहार्यता को ज्ञात करना आवश्यक है। हमारे पारम्परिक चिकित्साविज्ञान और आधुनिक चिकित्साविज्ञान के बीच सदैव द्वंद्व रहा है। आज के परिप्रेक्ष्य में अति प्राचीन काल से भारत में आयुर्वेदिक औषधियों को आधुनिक चिकित्साविज्ञान की कसौटी में कसने की आवश्यकता है अर्थात उनका मूल्यांकन करना आवश्यक है। हमें ग्रामीण रोगियों के लिए किफ़ायती चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। डॉ कटोच का मानना था कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य अभी भी उपेक्षित है। स्वास्थ्य कार्यक्रमों की सफलता शीर्ष राजनीतिज्ञों और अधिकारियों के नेतृत्व पर निर्भर करती है। भारत में स्वच्छ भारत आभियान की सफलता एक ताजा उदाहरण है। रोगियों के इलाज और निदान में प्रयुक्त साधनों/यंत्रों की कीमतें बहुत अधिक हैं। आज हमें उनकी पहुंच प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तक सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

डॉ मंजू शर्मा ने व्यक्त किया कि देश में कुपोषण जैसी स्वास्थ्य समस्या को दूर करने के लिए आई सी एम आर, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, (आई सी ए आर), केन्द्रीय खाद्य एवं विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान (सी एफ टी आर आई) जैसी संस्थाओं को एक साझे प्रयास के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। डॉ शर्मा ने कहा कि ''स्वच्छ भारत अभियान'' से अत्यधिक प्रभावी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं बशर्ते भारत सरकार की कई एजेंसियां आपसी समन्वयन में कार्य करें। हमें ग्रामीण विकास इकाइयों को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है''।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ अभय बांग ने 'गांधी जी के साथ दो कदम' शीर्षक से अपना प्रमुख व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि ''दिनांक 20 मार्च, 2019 को आई सी एम आर के महानिदेशक महोदय की टोली के एक सदस्य के रूप में परम पावन दलाई लामा जी से मिलकर ऐसा प्रतीत हुआ कि हम आध्यात्मिक लोक में पहुंच गए हैं। परम पावन दलाई लामा ने महात्मा गांधी के

महात्मा गांधी के स्वास्थ्य से संबंधित रोचक तथ्य

- महात्मा गांधी लगभग 40 वर्षों तक प्रतिदिन लगभग 18 कि. मी. की दूरी पैदल चलते थे। वर्ष 1913 से 1948 तक अपने विभिन्न अभियानों के दौरान वे लगभग 79,000 कि. मी. पैदल चले, जो पृथ्वी का दो चक्कर लगाने के बराबर है।
- गांधी जी ने अपनी पुस्तक *''की टु हेल्थ''* में कहा है कि अनुभव ने मुझे सिखाया है कि पूर्णतया स्वस्थ रहने के लिए अपने शाकाहार में दूध के साथ–साथ दही, मक्खन, घी, आदि जैसे दूध से निर्मित उत्पादों को अवश्य सम्मिलित करना चाहिए।
- गांधी जी उच्च रक्तचाप से प्रभावित थे और '*हेल्थ फाइल ऑफ गांधी जी* (1924–47)' के अनुसार उनका रक्त चाप 194/130 और 220/110 (क्रमशः 26.10.1937 और 19.02.1940) जितना उच्च था।
- गांधी जी सदैव चाय और कॉफी के साथ–साथ नशीली दवाइयों, तम्बाकू और अल्कोहल का सेवन नहीं करने का कड़ाई के साथ उपदेश देते थे।
- गांधी जी की स्वास्थ्य रिपोर्ट्स के आधार पर उनकी धमनी के संकीर्णन के कारण उनकी धमनियों में लचीलेपन की कमी हो गई थी, परन्तु उनके मायोकार्डियम (हृदय की पेशी) की स्थिति उत्तम थी (दिनांक 27 और 28 अक्टूबर, 1937)।
- गांधी जी की आंखों की जांच में *फण्डस ऑकुली* की स्थिति का संकेत मिला, लेंसों में परिवर्तनों के अलावा उनकी आंखें स्वस्थ थीं।
- दिनांक 19 जनवरी, 1936; 9 दिसम्बर, 1937; और 5 अप्रैल, 1938 को गांधी जी की बायोकेमिकल जांचों के परिणामस्वरूप उनका रक्त शर्करा स्तर सामान्य स्तर से कम था।

अहिंसा, संवेदना और करुणा भाव को आज के युग के लिए अत्यन्त प्रासंगिक बताया। महात्मा गांधी के कथन ''यदि आप स्वस्थ्य रहना चाहते हैं तो स्वस्थ जीवन शैली अपनाएं'' को भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक बताया। डॉ बांग ने गढ़चिरोली में बापू के 'आरोग्य स्वराज्य' के अनुरूप जनजातीय लोगों के स्वास्थ्य के प्रति अपना जीवन समर्पित किया है। देश में अल्कोहल/मद्यपान की लत व्यापक रूप से फैली है। हमें तम्बाकू और अल्कोहल सेवन के विरुद्ध कठिन कदम उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि ''भोजन के संदर्भ में हमें अपनी जिह्वा पर नियंत्रण रखना चाहिए, शारीरिक श्रम करना चाहिए और सम्पूर्ण जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहिए, तभी हम महात्मा गांधी के बताए मार्ग पर चलकर स्वयं को स्वस्थ रख सकते हैं''।

गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति के अध्यक्ष डॉ ए.के. अरुण ने गांधी जी द्वारा अपनाए गए प्राकृतिक चिकित्सा को उत्तम स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण अंग बताया। वर्धा स्थित कस्तूरबा स्वास्थ्य सोसाइटी के सचिव डॉ बी.एस. गर्ग ने स्वास्थ्य के संबंध में गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुपालन के लिए सुझाव दिया कि सभी मेडिकल छात्रों के लिए पोषण पर एक 15 दिवसीय शिविर आयोजित किया जाना चाहिए जहां उन्हें गांधी जी के 'सादा जीवन उच्च विचार' के कथन से व्यावहारिक रूप से अवगत कराया जा सके। शिविर में श्रमदान, शाकाहार सेवन, सभी धर्मों की प्रार्थना, तम्बाकू/अल्कोहल सेवन के लिए निषेध जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को स्थान दिया जाना चाहिए। इस समाज सेवा शिविर में सभी मेडिकल छात्र खादी कपड़े पहनें, ग्रामीण जीवन अपनाएं, पंचायत से अनुरोध करके एक ग्राम को अपनाएं जहां शिविर के दौरान अपनी सेवाएं प्रदान कर सकें। शिविर की अवधि समाप्त होने पर मेडिकल छात्र से स्वयं के अनुभवों के विषय में और समुदाय के लोगों से मेडिकल छात्र से प्राप्त सेवाओं के विषय में जानकारी प्राप्त की जाए। इस तरह स्वास्थ्य के संदर्भ महात्मा गांधी के सिद्धातों का अनुपालन प्रभावी तरीके से संभव है।

एन डी टी वी इंडिया समाचार चैनेल के साइंस एडीटर डॉ पल्लव बागला ने ''जन समूह से जुड़ना : गांधीवादी प्रयास'' विषय पर अपने व्याख्यान में जोर दिया कि वर्तमान युग में *'सोशॅल मीडिया'* एक अत्यन्त शक्तिशाली साधन है, अतः, वैज्ञानिकों का दायित्व होता है कि प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के साथ–साथ *सोशॅल मीडिया* के माध्यम से वे उपलब्धियों को जन साधारण तक पहुंचाएं।

''स्वच्छ भारत : दि गांधियन प्रींसिपल दैट इज़ चेंजिग दि फेस ऑफ इंडिया'' शीर्षक से आयोजित पैनेल चर्चा में डॉ इंदिरा चक्रवर्ती; श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह, पूर्व राज्यपाल, सिक्किम; डॉ आर. रमणन, मिशन निदेशक, अटल इन्नोवेशन मिशन; डॉ जे.पी. नारायण तथा आई सी एम आर के अपर महानिदेशक डॉ चन्द्र शेखर ने भाग लिया। डॉ रमणन ने तेजी से हो रहे जलवायु परिवर्तन पर चिन्ता व्यक्त की कि हमें इस ग्रह को सुरक्षित रखना है, तभी हम खुशहाल एवं स्वस्थ जीवन को सुनिश्चित कर सकते हैं। उन्होंने अपने छात्रों को ऐसे प्रशिक्षण देने को महत्वपूर्ण बताया जिससे वे सफल *इन्नोवेटर्स* बन सकें। डॉ जे.पी. नारायण ने दिनांक 15 अगस्त, 2014 को आरम्भ किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' को भारतीय जन समूह को स्वस्थ बनाए रखने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम बताया। आज देश के 5.5 लाख गांवों में खुले में शौच नहीं करने के व्यवहारात्मक परिवर्तन का प्रदर्शन इस अभियान की

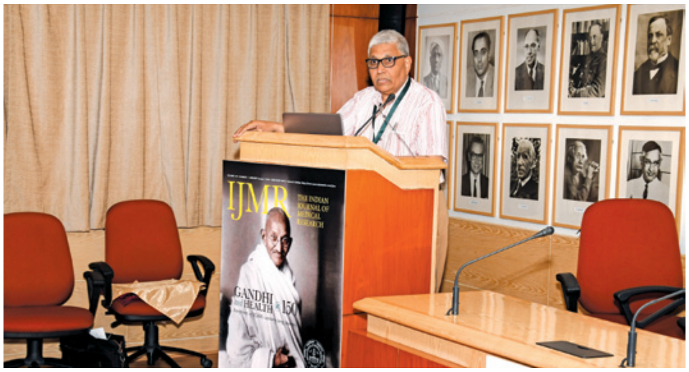

डॉ बी.एस. गर्ग द्वारा सम्बोधन।

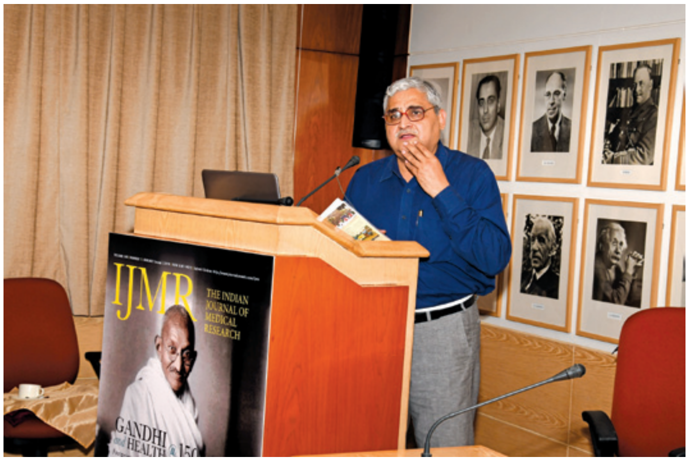

डॉ पल्लव बागला द्वारा सम्बोधन।

डॉ जी. एम. सुब्बाराव द्वारा प्रस्तुतीकरण।

सार्थकता का प्रतीक है। डॉ चन्द्र शेखर ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में बताया कि इन्नोवेशन के सन्दर्भ में 'स्वच्छ भारत अभियान' के अन्तर्गत अभी बहुत किए जाने की आवश्यकता है।

दिनांक 26 मार्च, 2019 को *''गांधी ए नोन लीडर–अननोन साइंटिस्ट : एक्सपेरीमेंट्स विद डाइट ऐण्ड डाइटीटिक्स''* शीर्षक से आयोजित संगोष्ठी के तृतीय सत्र में राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के निदेशक श्री ए. अन्नामलाई ने अपना मुख्य व्याख्यान दिया। उन्होंने व्यक्त किया कि महात्मा गांधी द्वारा बताए मार्गों के अनुसरण में अपने संसाधनों को संरक्षित रखना, स्वस्थ जीवन शैली अपनाते हुए प्रकृति में वापस जाना, अहिंसा का अनुपालन करना, पारम्परिक ज्ञान पर आधारित प्राकृतिक चिकित्सा को अपनाना वर्तमान प्ररिपेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक है।

हैदराबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ जी. एम. सुब्बाराव ने ''एक पोषण वैज्ञानिक के रूप में गांधी'' विषय पर एक अत्यन्त रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने खाद्य सुरक्षा के अन्तर्गत ग्रामीण स्तर पर खाद्य उत्पादन बढ़ाने, सभी के लिए उच्च कोटि के पोषक आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करने, स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्यों के व्यापक प्रयोग को बढ़ावा देने को स्वास्थ्य के संबंध में महात्मा गांधी द्वारा बताए गए सिद्धातों के प्रति प्रासंगिक बताया। उन्होंने बताया कि ''महात्मा गांधी चीनी

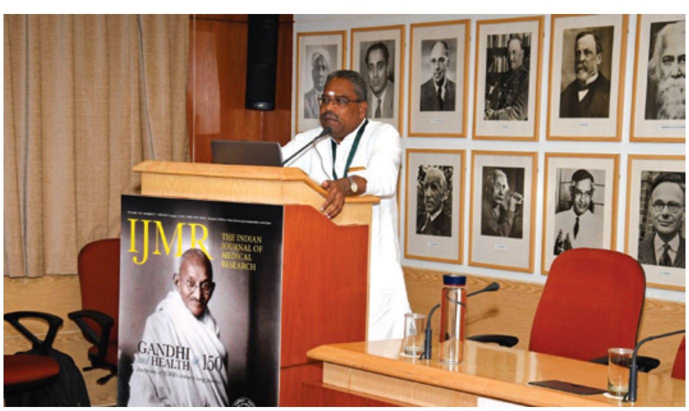

श्री ए. अन्नामलाई द्वारा सम्बोधन।

के स्थान पर गुड़ का सेवन पसन्द करते थे जिसकी उपलब्धता गांव स्तर तक होती है। गांधी जी वसा के रूप में शुद्ध देसी घी, प्रोटीन के रूप में दालों और बकरी के दूध का सेवन करते थे। आहार एवं स्वास्थ्य के संबंध में महात्मा गांधी के विचारों को आज वैज्ञानिक समर्थन प्राप्त है। पोषण वैज्ञानिकों के अनुसार गांधी जी के सिद्धान्त कुपोषण और हृदय रोगों जैसी स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मददगार हैं''। डॉ सुब्बाराव के अनुसार गांधी जी अधिक मात्रा में आहार ग्रहण करने, स्टार्च और शर्करा का सेवन करने के पक्ष में नहीं थे। महात्मा गांधी स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी का आदान–प्रदान करते थे। उन्होंने राष्ट्रीय पोषण संस्थान के प्रथम निर्देशक राबर्ट मैककारिसन के साथ स्वास्थ्य और आहार के संबंध में पारस्परिक विचार–विमर्श किया था। गांधी जी का दैनिक पैदल चलने, नियमित रूप से व्यायाम करने और स्वच्छता का अनुपालन करने का सिद्धात जीवन शैली से जुड़े रोगों पर नियंत्रण रखने पर आज भी प्रासंगिक है। कुल मिलाकर महात्मा गांधी आहार के संबंध में स्वयं पर प्रयोग करते थे।

मेक इन इंडिया–गांधीज़ मंत्र फॉर हेल्थ इन्नोवेशन'' शीर्षक से आयोजित पैनेल चर्चा में आई सी एम आर के पूर्व महानिदेशक डॉ एन. के. गांगुली; जैवप्रौद्योगिकी विभाग के पूर्व सचिव डॉ एम. के. भान तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ इन्दु भूषण ने भाग लिया। इस चर्चा में डॉ चन्द्र शेखर ने मध्यस्थता की। डॉ गांगुली ने महात्मा गांधी को भारत में नमक उत्पादन और सभी भारतवासी को कम मूल्य पर उसे उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संचालित 'नमक सत्याग्रह' और 'डांडी मार्च' को इस विषय के प्रति प्रासंगिक बताया। उन्होंने गांधी जी के स्वच्छता अभियान को एक स्वस्थ भारत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया।

डॉ भान ने व्यक्त किया कि नवाचार (इन्नोवेशन) के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों से इन्नोवेटर्स सदैव प्रोत्साहित होते रहेंगे।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ इन्दु भूषण ने बताया कि गांधी जी सदैव गरीब लोगों के स्वास्थ्य एवं कल्याण के प्रति चिन्तित रहते थे। उनके विचारों के अनुरूप

पैनेल चर्चा के दौरान बाएं से डॉ चन्द्र शेखर, डॉ इन्दु भूषण, डॉ एम. के. भान एवं प्रो. एन. के. गांगुली।

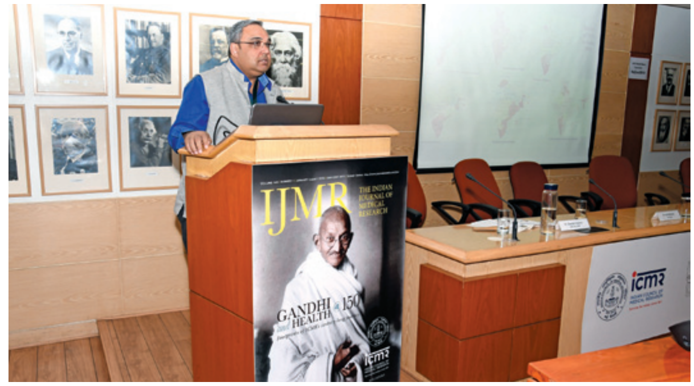

डॉ प्रशान्त माथुर द्वारा प्रस्तुतीकरण।

देश में 'स्वच्छ भारत' और 'आयुष्मान भारत' जैसे अभियान चलाए गए हैं। देश में गरीबी उन्मूलन उनका मुख्य उद्देश्य था।

चतुर्थ सत्र का विषय था *'पब्लिक हेल्थ लेगेसी ऑफ गांधी'*। आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ रजनी कान्त ने ''महात्मा गांधी के स्वास्थ्य और उनके द्वारा अन्य की देखभाल'' विषय में रोचक व्याख्यान दिया।

आई सी एम आर मुख्यालय में जानपदिक रोगविज्ञानी एवं संचारी रोग प्रभाग के प्रमुख एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर. आर. गंगाखेडकर ने स्वास्थ्य पर महात्मा गांधी के सिद्धान्तों के अनुरूप 'संचारी रोग और स्वच्छता' विषय पर व्याख्यान दिया। बेंगलुरू स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय रोग सूचनाविभाग एवं अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ प्रशान्त माथुर ने 'असंचारी रोग और तम्बाकू' विषय पर व्याख्यान दिया जो किसी भी प्रकार के नशे के विरुद्ध महात्मा गांधी के विचारों के अनुरूप था।

'गांधी और अंतर्राष्ट्रीय परिदृष्य' विषय पर आयोजित पैनेल चर्चा की मध्यस्थता शोध सूचना सेवा के महानिदेशक डॉ सचिन चतुर्वेदी ने की। डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरगांबाद के विज़िटिंग प्रोफेसर प्रो. मार्क लिण्डले एक समर्पित गांधीवादी हैं। वे कोलम्बिया विश्वविद्यालय, सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क, वाशिंगटन विश्वविद्यालय, लंदन विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, चाइनीज़ यूनिवर्सिटी ऑफ हांग कांग, केरल विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय जैसे अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर चुके हैं। प्रो. लिण्डेले ने अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में स्वास्थ्य पर महात्मा गांधी के विचारों की चर्चा की। आई सी एम आर मुख्यालय में अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रभाग के अध्यक्ष एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ मुकेश कुमार ने व्यक्त किया कि प्रसन्नता की उत्पत्ति हमारे स्वयं के भीतर से होती है। भारत में जर्मनी दूतावास के राजनयिक स्टीफेन लैंज़िंजर ने महात्मा गांधी को एक पर्यावरणविद मानते हुए रोगों को रोकने में उनके महत्वपूर्ण विचारों को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के संबंध में महात्मा गांधी के सिद्धात न केवल भारत बल्कि जर्मनी में भी लोकप्रिय हैं। नई दिल्ली स्थित दक्षिण कोरिया दूतावास के राजनयिक श्री सुंग जिन पार्क ने व्यक्त किया कि उनके देश के राष्ट्रपति स्वयं गांधी जी के विचारों पर विश्वास करते हुए उनका अनुसरण करते हैं।

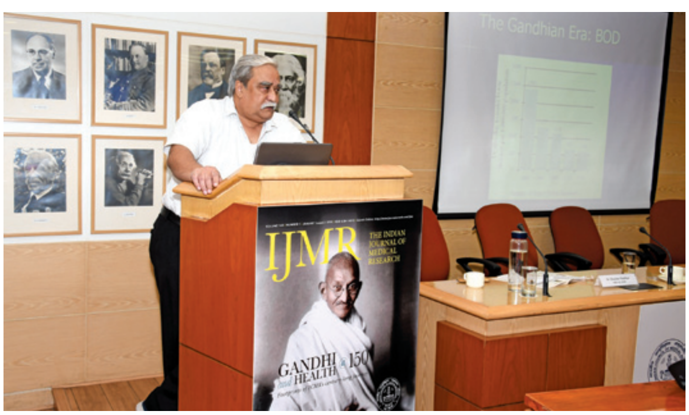

डॉ आर. आर. गंगाखेड़कर द्वारा प्रस्तुतीकरण।

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पैनेल चर्चा के अवसर पर मंचासीन बाएं से डॉ मुकेश कुमार, डॉ सचिन चतुर्वेदी, श्री स्टेफन लैंजिंजर, सुश्री तानिया फ्रीडरिक्स, श्री सुंग जिन पार्क, डॉ मार्क लिण्डले और डॉ हेनरी एच. चेन।

नई दिल्ली में यूरोपीय संघ की प्रतिनिधी सुश्री तानिया फ्रीडरिक्स ने व्यक्त किया कि भारत में व्याप्त जीवन शैली संबद्ध विकारों की समस्या यूरोपीय देशों में भी व्याप्त है। हमें शोध और इन्नोवेशन के माध्यम से मिलकर इन समस्याओं को दूर करने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य पर किया जाने वाला व्यय न केवल

भारत बल्कि यूरोपीय देशों में भी किफ़ायती बनाने की आवश्यकता है। भारत में ताइवान दूतावास के राजनयिक डॉ हेनरी एच. चेन ने व्यक्त किया कि महात्मा गांधी अंहिसा के महान समर्थक थे, उनका यह सिद्धान्त न केवल भारत बल्कि ताइवान में भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने सूचित किया ताइवान में भी गांधी जी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हमें उत्तम स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए योग को बढ़ावा देना चाहिए और अल्कोहल अथवा तम्बाकू जैसे मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए।

मुम्बई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय प्रजनन अनुसंधान संस्थान की निदेशक डॉ स्मिता महाले ने 'मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में आई सी एम आर के योगदान' तथा भोपाल स्थित आई सी एम आर–पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ राज नारायण तिवारी ने एक 'पर्यावरणविद के रूप में गांधी' विषयों पर सूचनापरक व्याख्यान दिए।

इस संगोष्ठी के दौरान वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग के सचिव और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ शेखर सी. माण्डे ने आई सी एम आर द्वारा प्रकाशित *''नेशनल ऐथिकल गाइडलाइंस फॉर बायोमेडिकल ऐण्ड हेल्थ रिसर्च इनवाल्विंग ह्युमन पार्टीसिपैंट्स'* नामक हैण्डबुक का विमोचन किया। संगोष्ठी का पंचम सत्र 'गांधी और मानसिक स्वास्थ्य –स्व, स्वास्थ्य और संचेतना' विषय पर आधारित था। बेंगलुरू स्थित राष्ट्रीय उन्नत अनुसंधान संस्थान की प्रो. संगीता मेनन ने 'गांधी और स्वास्थ्य के मौलिक सिद्धातों के रूप में आत्म संचेतन और निःस्वार्थ सेवा का मनोविज्ञान' विषय पर अत्यन्त रोचक व्याख्यान दिया। प्रो. मेनन ने व्यक्त किया कि ''गांधी जी के तीन दर्शन–सत्यम, अहिंसा और सत्याग्रह में सत्यम स्वास्थ्य से संबधित है। गांधी जी

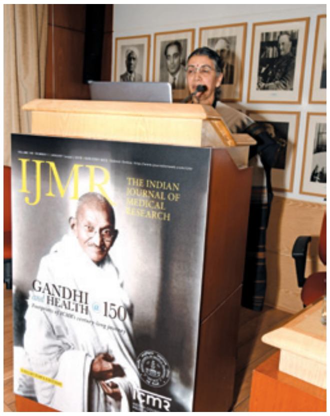

डॉ स्मिता महाले द्वारा प्रस्तुतीकरण।

डॉ राज नारायण तिवारी द्वारा प्रस्तुतीकरण।

सदैव अपने पर किए गए प्रयोगों पर आधारित ज्ञान को दूसरों को बांटते थे। शिमला स्थित भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला के निदेशक प्रो मकरन्द परांजपे ने 'स्वास्थ्य के प्रति महात्मा के प्रयास के नैतिक एवं मेटाफिजिकल आधार' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. परांजपे ने बताया कि गांधी जी प्राकृतिक चिकित्सा पर

डॉ शेखर सी. माण्डे (बाएं से तीसरे) एवं अन्य अतिथियों द्वारा *एथिकल गाइडलाइंस* हैण्डबुक का विमोचन (बाएं से डॉ प्रशान्त माथुर, डॉ रजनी कान्त, डॉ शेखर सी. माण्डे, डॉ अभय बांग, श्री ए. अन्नामलाई और डॉ रोली माथुर)।

प्रो. संगीता मेनन द्वारा प्रस्तुतीकरण।

बहुत अधिक विश्वास करते थे और स्वयं पर प्रयोग कर अपने को स्वस्थ करते थे।

संगोष्ठी का अंतिम व्याख्यान बेंगलुरू स्थित मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान के मनश्चिकित्सा विभाग के डॉ उर्वक्ष मेहता ने *'नोइंग सेल्फ इज़ नोइंग दि अदर : मेंटल हेल्थ ऐण्ड मिरर न्युरांस'* विषय पर सूचनापरक व्याख्यान दिया।

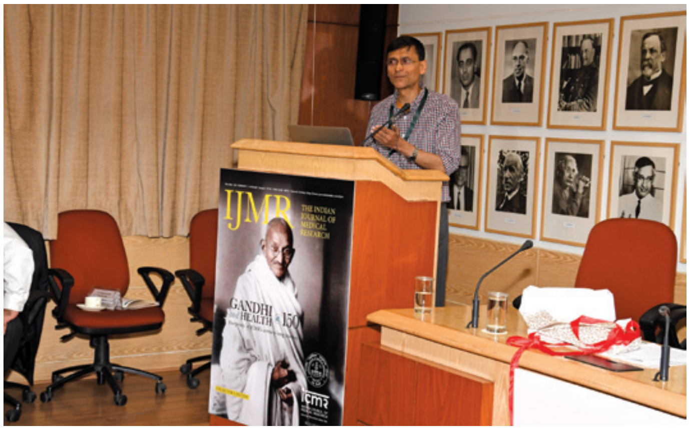

प्रो. मकरन्द परांजपे द्वारा प्रस्तुतीकरण।

दिनांक 25 मार्च, 2019 को संगोष्ठी के प्रथम दिवस के कार्यक्रम के समापन पर आई सी एम आर के प्रांगण में महात्मा गांधी के मूल्यों पर आधारित एक भजन संध्या आयोजित की गई। बेंगलुरू स्थित इंदिरा गांधी संस्कृति संस्थान की निदेशक डॉ दीप्ति नवरत्ना ने महात्मा गांधी के प्रिय भजनों का गान किया। इस दो–दिवसीय संगोष्ठी के दौरान आई सी एम आर मुख्यालय में आयोजित एक प्रदर्शनी में महात्मा गांधी के मूल्यों, जीवन, और व्यवहार से जुड़ी वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया साथ ही उनकी *ऑडियो क्लिप्स* भी प्रदर्शित की गई।

आई सी एम आर के अपर महानिदेशक डॉ चन्द्र शेखर ने इस संगोष्ठी में सम्मिलित सभी वक्ताओं, आमंत्रित अतिथियों, मीडिया कर्मियों, वैज्ञानिकों को अपना बहुमूल्य समय देने और गांधी जी से जुड़ी अत्यंत रोचक एवं सूचनापरक जानकारी प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव के प्रति आभार व्यक्त किया जिनके कुशल मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने इस संगोष्ठी के आयोजन से जुड़े आई सी एम आर के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

भजन संध्या में डॉ दीप्ति नवरत्ना द्वारा महात्मा गांधी के प्रिय भजनों का गायन।

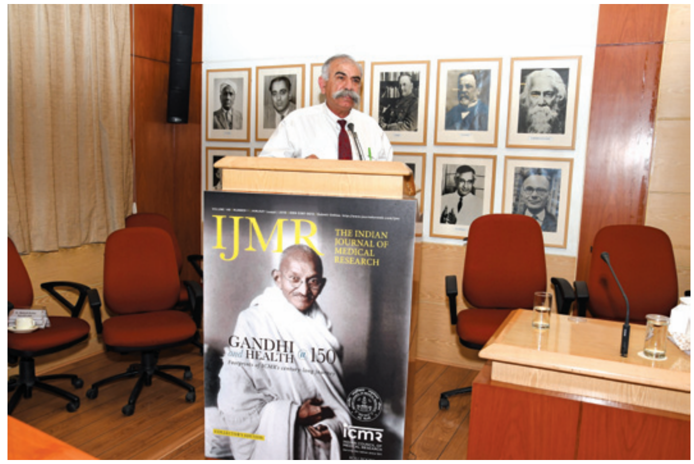

डॉ चन्द्र शेखर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन।

इस पुस्तक को डाउनलोड करें : http://icmr.gov.in

आई जे एम आर के विषय में

इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर) एशिया के पुराने मेडिकल जर्नल्स में एक है जिसकी वर्ष 1913 में शुरुआत की गई थी। आई जे एम आर की उपलब्धता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है और इसमें जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान के मौलिक शोध पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। जिससे जर्नल के पाठकों को शिक्षित करने के साथ–साथ मेडिकल आयुर्विज्ञान को बढ़ावा मिलता है। *आई जे एम आर* का मासिक प्रकाशन किया जाता है और वर्तमान में विश्व की सभी प्रमुख जागरूकता एवं एलर्टिंग सेवाओं द्वारा इंडेक्स्ड और एब्स्ट्रैक्टेड है। इस जर्नल में मौलिक शोध आलेखों, समीक्षा लेखों, शॉर्ट पेपर्स, शॉर्ट नोट्स के रूप में *पीयर रिव्यूड* उत्तम दर्जे के बायोमेडिकल शोध प्रकाशित किए जाते हैं।

जालोर, राजस्थान में आयोजित 'म्हारो राजस्थान 2019' प्रदर्शनी में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 13–15 फरवरी, 2019 के दौरान जालोर, राजस्थान में आयोजित ''म्हारो राजस्थान 2019'' प्रदर्शनी में भाग लिया। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य स्थानीय विद्यार्थियों, स्कूली बच्चों, शोधकर्ताओं, युवाओं और जन साधारण में भारत की शोध नीतियों, योजनाओं, विकास कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों के विषय में जागरूकता उत्पन्न करना था।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति जालोर के जिला अध्यक्ष डॉ वन्ने सिंह ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और भारत सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा प्रदर्शित योजनाओं और उपलब्धियों की सराहना की।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अहमदाबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के वैज्ञानिकों ने पोस्टर्स और पैम्फ्लेट्स के माध्यम से संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। दैनिक जीवन के लिए आवश्यक पोषण और सूक्ष्मपोषक तत्वों के महत्व के विषय में जानकारी प्रदान की। संस्थान के प्रतिनिधियों ने विभिन्न प्रकार के रोगों, उनके लक्षणों और बचाव के विषय में जागरूकता प्रदान की।

आई सी एम आर के अलावा भारत सरकार के अनेक संस्थानों/विभागों ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया जिनमें प्रमुख थे : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, वैज्ञानिक

तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सी एस आई आर), जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नारियल विकास बोर्ड, पृथ्वीविज्ञान, आदि।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद पैवीलियन का चयन जागरूकता फैलाने के लिए उत्तम स्टाल के रूप में किया गया। मुख्य अतिथि महोदय ने आई सी एम आर के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद के वैज्ञानिक 'बी' डॉ ज्ञानेन्द्र सिंह और डॉ डी. पी. चतुर्वेदी, ने ट्राफी और प्रमाण–पत्र प्राप्त किए।

आई सी एम आर–क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, गोरखपुर में 'बायोमेडिकल संचार' पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित

गोरखपुर स्थित आई सी एम आर–क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र में दिनांक 14–15 फरवरी 2019 के दौरान 'बायोमेडिकल (जैव–आयुर्विज्ञान) संचार' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी।

इस कार्यशाला का औपचारिक उद्‌घाटन दिनांक 14 फरवरी, 2019 को मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर गणेश कुमार, प्रधानाचार्य, बी आर डी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर ने दीप प्रज्वलित करके किया। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अतिथियों में डॉ पी. एल. जोशी; पूर्व निदेशक, एनवीबीडीसीपी, नई दिल्ली; डॉ आर. सी. शर्मा; पूर्व निदेशक, डीएमएमआरसी, जोधपुर; डॉ संघमित्रा पति, निदेशक, आई सी एम आर–क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, भुवनेश्वर; डॉ रजनीकांत, अध्यक्ष, शोध प्रबंधन नीति, कार्य योजना एवं समन्वयक, आई सी एम आर मुख्यालय, नई दिल्ली; डॉ पुष्कर आनंद, अपर निदेशक, स्वास्थ्य विभाग, गोरखपुर मंडल; डॉ गणेश यादव, संयुक्त निदेशक; डॉ ए.के. पाण्डेय, जिला अधिकारी, गोरखपुर एवं डॉ सागर, सर्विलांस मेडिकल ऑफिसर, डब्लू एच ओ, की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यशाला में आर एम आर सी, गोरखपुर के वैज्ञानिकों, जिला स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सक, अधिकारी एवं बी आर डी मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों ने भाग लिया। आई सी एम आर–आर एम आर सी, गोरखपुर के प्रभारी अधिकारी डॉ कामरान ज़मान ने मुख्य अतिथि के साथ–साथ सभी वक्ताओं एवं हाल में उपस्थित सभी श्रोताओं का स्वागत किया।

मुख्य अतिथि डॉ गणेश कुमार ने चिकित्सा–शोध के क्षेत्र में पूर्वांचल की असीम सम्भावनाओं पर प्रकाश डालते हुए मेडिकल कॉलेज के चिकित्सक एवं क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, गोरखपुर के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर क्षेत्र की प्रमुख स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं पर बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने मेडिकल कॉलेज में अध्ययनरत यूजी/पीजी छात्रों के लिए चिकित्सा–शोध पद्धति एवं तकनीकों पर एक कार्यशाला आयोजित करने के लिए अनुरोध किया।

डॉ रजनीकांत ने मौजूदा परिवेश में चिकित्सकों एवं वैज्ञानिकों के मीडिया प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण बताया एवं हर प्रकार के मीडिया की महत्ता को दर्शाते हुए बताया कि मीडिया के सहयोग से कई प्रकार की स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं को दूर करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। कार्यशाला में ''मीडिया कर्मियों से व्यवहार'' एवं ''मीडिया के साथ कार्य एवं सहयोग'' पर विशेष रूप से चर्चा की गयी। आई सी एम आर–क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, भुवनेश्वर की निदेशक डॉ संघमित्रा पति ने ''शोध पत्र लेखन'' विषय पर सूचनापरक व्याख्यान दिया। डी एम आर सी, जोधपुर, के पूर्व निदेशक डॉ आर. सी. शर्मा ने ''वैज्ञानिकों में नेतृत्व गुण विकसित करने के संदर्भ में'' विषय पर रोचक व्याख्यान दिया। एनवीबीडीसीपी, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक डॉ पी. एल. जोशी ने ''आर एम् आर सी, गोरखपुर की भविष्य शोध नीति, योजना, प्राथमिकताओं एवं संभावित क्षेत्रों तथा अन्य संस्थानों के साथ साझेदारी'' विषय पर विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला में आई सी एम आर, नई दिल्ली के अधिकारी, वैज्ञानिक, बी आर डी मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों स्वास्थ्य विभाग गोरखपुर के अधिकारी, ग्लोबल हेल्थ स्ट्रैटेजी (जी एच एस) विशेषज्ञ एवं आर एम आर सी, गोरखपुर के समस्त वैज्ञानिकों एवं कर्मचारीयों ने भाग लिया एवं उन व्याख्यानों में अपनी रुचि दिखाई।

कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ अधिकारीगण।

फरीदाबाद में आयोजित 'विकास एवं नीतियां एक्स्पो–2019' में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की भागीदारी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 22–24 फरवरी, 2019 के दौरान फरीदाबाद, हरियाणा में आयोजित '7वें शासकीय विकास एवं नीतियां एक्स्पो–2019' में भाग लिया। हरियाणा राज्य के राज्य मंत्री श्री अमन गोयल ने दिनांक 22 फरवरी, 2019 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में पोस्टर्स के माध्यम से भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद शोध गतिविधियां और उपलब्धियां प्रदर्शित की गईं। इस अवसर पर नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर मुख्यालय और हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा पोषण से संबंधित विविध विषयों पर प्रकाशित पुस्तकें विक्रय हेतु रखी गईं। बड़ी संख्या में जन साधारण, विद्यार्थीगण एवं शोधार्थीगण ने आई सी एम आर स्टाल में पधार कर इसकी शोध गतिविधियों के विषय में जानकारी प्राप्त की। बड़ी संख्या में लोगों ने पोषण और स्वास्थ्य पर आधारित पुस्तकें क्रय कीं। दिनांक 23 फरवरी, 2019 को हरियाणा शिक्षा विभाग के अध्यक्ष श्री कुँवर शैलेन्द्र सिंह आई सी एम आर स्टाल में पधारे और शोध कार्यों पर जानकारी प्राप्त करने के साथ–साथ परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में काफी रुचि दिखाई। दिनांक 24 फरवरी, 2019 को हरियाणा राज्य के उद्योग मंत्री श्री विपुल गोयल आई सी एम आर स्टाल में पधारे और परिषद की शोध गतिविधियों एवं उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्राप्त की। माननीय मंत्री महोदय ने भी आई सी एम आर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों विशेषतया पोषण और स्वास्थ्य से संबंधित पुस्तकों के विषय में गहरी रुचि दिखाते हुए जानकारी प्राप्त की।

समापन समारोह के अवसर पर आई सी एम आर के प्रतिनिधि ने स्मृति चिन्ह प्राप्त किए।

शिक्षा विभाग के अध्यक्ष श्री कुंवर शैलेन्द्र सिंह आई सी एम आर स्टाल में।

माननीय उद्योग मंत्री श्री विपुल गोयल आई सी एम आर स्टाल में।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के विभिन्न तकनीकी दलों/तकनीकी समितियों की नई दिल्ली में सम्पन्न बैठकें:

भेषजगुणविज्ञान और औषधीय पादप पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	5 मार्च, 2019
जानपदिक रोग विज्ञान एवं संचारी रोग (ई सी डी) प्रभाग की विशेष समिति की बैठक	5 मार्च, 2019
प्रजनन जैविकी मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य (आर बी एम सी एच) प्रभाग परियोजना समीक्षा समूह की बैठक	6 मार्च, 2019
स्टेम सेल अनुसंधान एवं चिकित्सा के लिए विशेषज्ञ समूह की बैठक	6 मार्च, 2019
असंचारी रोग प्रभाग के अंतर्गत डाटा विज्ञान और कैंसर अनुसंधान पर बैठक	6 मार्च, 2019

ई सी डी प्रभाग के अन्तर्गत फेलोशिप पर बैठक	8 मार्च, 2019
आर बी एम सी एच प्रभाग के अन्तर्गत प्रस्तावों के परियोजना समीक्षा समूह की बैठक	8 मार्च, 2019
क्षयरोग की नैदानिकी पर बैठक	11 मार्च, 2019
मौलिक आयुर्विज्ञान (बी एम एस) प्रभाग के अन्तर्गत प्रस्तावों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	11 मार्च, 2019
पूर्ण एड–हॉक प्रस्तावों की समीक्षा हेतु परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	11 मार्च, 2019
पोषण पर आई सी एम आर टास्क फोर्स परियोजना पर बैठक	11 मार्च, 2019
फ्लोरोसिस पर आई सी एम आर टास्क फोर्स परियोजना पर बैठक	12 मार्च, 2019
कोशिकीय और आण्विक जैविकी तथा जीनोमिक्स में फेलोशिप पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	12 मार्च, 2019
बी एम एस प्रभाग के अन्तर्गत संयुक्त परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	12 मार्च, 2019
स्वास्थ्य मंत्रालय की जांच समिति (HMSC) की बैठक	13 मार्च, 2019
आर बी एम सी एच प्रभाग के विशेषज्ञ समिति की बैठक	13 मार्च, 2019
राष्ट्रीय इशेंशियल डायग्नॉस्टिक लिस्ट से संबंधित बैठक	13 मार्च, 2019
आई सी एम आर–सी जी एच आर सहयोग की समीक्षा के संबंध में बैठक	13 मार्च, 2019
स्टेम सेल थिरैपी के दिशानिर्देशों के लिए ड्राफ्टिंग समिति की बैठक	13–14 मार्च, 2019
ई सी डी प्रभाग के अन्तर्गत प्रस्तावों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	13–14 मार्च, 2019
एन सी डी–बी ओ डी अध्ययन हेतु राष्ट्रीय तकनीकी कार्यकारी समूह की बैठक	14–15 मार्च, 2019
रिसर्च मेथडोलॉजी सेल (आर एम सी) के अन्तर्गत परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	14 मार्च, 2019
ई सी डी प्रभाग के अन्तर्गत संक्रामक रोगों पर बैठक	15 मार्च, 2019
राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के साथ स्वास्थ्य पर पैकेज के प्रभाव पर प्रस्तुतिकरण	15 मार्च, 2019
महानिदेशक, आई सी एम आर के समक्ष सभी कार्यक्रम अधिकारियों की बैठक	15 मार्च, 2019
पोषण पर टास्क फोर्स अध्ययन से संबंधित अध्ययन	16 मार्च, 2019
इनोवेशन एवं ट्रांसलेशनल शोध (ITR) प्रभाग के अन्तर्गत परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	16 मार्च, 2019
रोटावाइरस वैक्सीन पर बैठक	18 मार्च, 2019
पूर्वोत्तर और जनजातीय क्षेत्रों से संबंधित परियोजनाओं हेतु परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	18 मार्च, 2019
आयोडीन अल्पता विकार (IDD) पर आई सी एम आर–डी जी एच एस की संयुक्त कार्यशाला	18–19 मार्च, 2019
नैनो मेडिसिन पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	18–19 मार्च, 2019
नवनियुक्त यू डी सी/सहायक/पी ए के साथ बैठक	19 मार्च, 2019
कोशिकीय एवं आण्विक जैविकी से संबंधित विशेषज्ञ समूह की बैठक	20 मार्च, 2019
मुखीय स्वास्थ्य से संबंधित फेलोशिप्स और तदर्थ परियोजनाओं पर बैठक	20 मार्च, 2019
विषाणुविज्ञान पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	20 मार्च, 2019
हृदयरोगविज्ञान पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	22 मार्च, 2019
दुर्लभ रोगों पर टास्क फोर्स अध्ययन से संबंधित बैठक	22 मार्च, 2019
मौलिक आयुर्विज्ञान (बी एम एस) प्रभाग के अन्तर्गत फेलोशिप्स पर विशेषज्ञ समूह की बैठक	22 मार्च, 2019

बालकालीन चोटों पर टास्क फोर्स अध्ययन पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	22 मार्च, 2019
एस टी डब्ल्यू ब्रीफिंग पर बैठक	22 मार्च, 2019
भारतीय बायो–बैंक पर बैठक	23 मार्च, 2019
खाद्यजनित रोगजन की जांच पर ब्रेन स्टॉर्मिंग बैठक	25 मार्च, 2019
'गांधी एवं स्वास्थ्य @150' पर संगोष्ठी	25–26 मार्च, 2019
मेडिकल इनोवेशन स्कीम से संबंधित विशेषज्ञ समिति की बैठक	25 मार्च, 2019
असंचारी रोग (NCD) प्रभाग के अन्तर्गत परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	25 मार्च, 2019
पशुजन्य रोगों से संबंधित परिपूर्ण प्रस्तावों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	26 मार्च, 2019
आर बी एम सी एच प्रभाग के अन्तर्गत परियोजनाओं की परियोजना पुनरीक्षण समूह की बैठक	26 मार्च, 2019
असंचारी रोग प्रभाग के अन्तर्गत परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	26–27 मार्च, 2019
जराविद्या पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	27 मार्च, 2019
रोगवाहक जन्य रोगों पर परिपूर्ण प्रस्तावों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	27 मार्च, 2019
स्टैण्डर्ड ट्रीटमेंट वर्कफ्लो पर सलाहकार समिति की बैठक	27 मार्च, 2019
भारत–अफ्रीका के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर से संबंधित बैठक	27 मार्च, 2019
आर बी एम सी एच प्रभाग के अन्तर्गत विशेषज्ञ समूह की बैठक	27 मार्च, 2019
आई एस आर एम प्रभाग के अन्तर्गत परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	27–28 मार्च, 2019
अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रभाग के अन्तर्गत भारत–अफ्रीका संघ की बैठक	27–28 मार्च, 2019
वृक्करोगविज्ञान / मूत्ररोगविज्ञान एवं ऑर्थोपेडिक्स पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	28 मार्च, 2019
ट्रामा के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	28 मार्च, 2019
ई सी डी (I एवं II) प्रभाग के अंतर्गत परिपूर्ण प्रस्तावों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	28 मार्च, 2019
टी बी वैक्सीन पर विशेषज्ञ के साथ चर्चा बैठक	28 मार्च, 2019
पर्यावरण और पल्मोनरी मेडिसिन के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	29 मार्च, 2019
असंचारी रोग प्रभाग के अंतर्गत परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	29 मार्च, 2019
पी ओ डी वैक्सीन परीक्षण से संबंधित बैठक	29 मार्च, 2019
ए एन एस पी से संबंधित प्रमुख अध्ययनकर्ताओं के साथ बैठक	30 मार्च, 2019

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गतिविधियों में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों की भागीदारी

नोएडा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण और अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. रवि महरोत्रा, वैज्ञानिक 'डी' डॉ प्रशांत कुमार सिंह एवं वैज्ञानिक 'सी' डॉ रवि कौशिक ने कोलम्बो, श्रीलंका में दक्षिण एशिया में धूम्रपान रहित तम्बाकू तथा अनुसंधान क्षमता निर्माण की समस्या दूर करने ("ASTRA") की परियोजना की प्रबंधक दल की बैठक में भाग लिया (15–17 जनवरी, 2019)।

नोएडा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण और अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'सी' डॉ रवि कौशिक और पुणे स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'बी' डॉ लक्ष्मी मोहनदास ने टोक्यो, जापान में 'जापान के मैत्री संबंधों के कार्यक्रमों, JENESYS 2018 इन बांउड कार्यक्रम'' की बैठक में भाग लिया (21–29 जनवरी, 2019)।

भोपाल स्थित आई सी एम आर-राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'बी' डॉ अमित कुमार त्रिपाठी ने टोक्यो, जापान में छात्रों और युवाओं के आदान–प्रदान के लिए जापान–ईस्ट एशिया नेटवर्क (JENESYS) 2018 में भाग लिया (21–29 जनवरी, 2019)।

पॉण्डिचेरी स्थित आई सी एम आर–रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ एस. सुब्रामणियम ने सिंगापुर में 'एशिया प्रशांत क्षेत्र में व्यस्क टीकाकरण पर विशेषज्ञ बैठक में भाग लिया (22–23 जनवरी, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अनुप कुमार अन्विकर ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में ट्रिपल ऑटमिसिनन संयुक्त चिकित्सा विधान सहयोग (DeTACT) परियोजना के अध्ययनकर्ताओं की प्रथम बैठक में भाग लिया (24–25 जनवरी, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर-राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रभारी–निदेशक डॉ एस. पी. त्रिपाठी ने संयुक्त गणराज्य (यूके) में "ARREST & TB कंर्शोशियम बैठक'' में भाग लिया (28 जनवरी, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ प्रभदीप कौर ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में 'प्रिंस मेहिडोल पुरस्कार सम्मेलन (PMAC), में भाग लिया (28 जनवरी से 1 फरवरी, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' बीना थॉमस ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में नवाचार, उपलब्धता और वितरण के लिए संयुक्त प्रयास : एक वैश्विक वार्ता एवं प्रिंस महिदोल पुरस्कार सम्मेलन (PMAC)" में भाग लिया (30 जनवरी से 3 फरवरी, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ के. सी. पाण्डेय ने सुओन–सी, दक्षिण कोरिया में चतुर्थ KOICD-C3BIRD-TIDCL अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं TIDCL की द्वितीय कार्यशाला में भाग लिया (18–22 फरवरी, 2019)।

पटना स्थित आई सी एम आर–स्मारक चिकित्सा विज्ञान अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ प्रदीप दास ने ढाका, बांग्लादेश में ''दक्षिण एशिया में KalaCORE कार्यक्रमों का समापन : स्थाई उन्मूलन के लिए एक पूंजीकरण कार्यशाला'' में भाग लिया (19–20 फरवरी, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'ई' डॉ मंजुला सिंह ने जेनेरियो, ब्राज़ील में **BRICS क्षयरोग अनुसंधान नेटवर्क की चौथी बैठक'' में भाग लिया (19–21 फरवरी, 2019)।

अहमदाबाद स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान की वैज्ञानिक 'डी' डॉ बी. रविचन्द्रन ने बिल्थोवेन, नीदरलैण्ड्स में 'डब्ल्यू एच ओ के रासायनिक खतरों के मूल्यांकन नेटवर्क की बैठक में भाग लिया (20–21 फरवरी, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय के वैज्ञानिक 'सी' डॉ रविन्दर सिंह ने बाली, इंडोनेशिया में आयोजित ''ध्वनि श्रवण 2030 की द्वितीय विश्व कांग्रेस'' में भाग लिया (20–22 फरवरी, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय यक्ष्मा अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ सी. पदमाप्रियदर्शिनी ने ढाका, बांग्लादेश में दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में ऐंडिंग MDR–TB, की समाप्ति" पर सम्पन्न बैठक में भाग लिया (25–26 फरवरी, 2019)।

कोलकाता स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय हैज़ा और आंत्ररोग संस्थान की निदेशक एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ शांता दत्ता, 'एफ' डॉ आर. के. नंदी, वैज्ञानिक 'ई' डॉ हेमंत कोले, डॉ सांतासाबुज दास, डॉ सुमन वैज्ञानिक कानूनगो, डॉ ए. के. मुखोपाध्याय एवं वैज्ञानिक 'बी' डॉ प्रनब चटर्जी ने हैनोई, वियतनाम में प्रशांत क्षेत्र में उभरते संक्रामक रोगों (EID) पर यू एस–जापान सहयोगी चिकित्साविज्ञान कार्यक्रम (USJeMPS) के 21 वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया (26 फरवरी, से 1 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'ई' डॉ मंजू राही ने टापाकुला, मैक्सिको में ''स्टेराइल इंसेक्ट टेक्नीक (SIT) पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया (27 फरवरी, से 1 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय के अपर महानिदेशक डॉ चन्द्रशेखर ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में TDR-ESSENCE डब्ल्यू एच ओ में अंतर्राष्ट्रीय वैक्सींस अनुसंधान टास्क फोर्स बैठक'' में भाग लिया (4–5 मार्च, 2019)।

नई दिल्ली स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक डॉ एम. विष्णु वर्धन राव तथा वैज्ञानिक 'एफ' डॉ दामोदर साहू ने बैंकॉक, थाईलैण्ड में ''एच आई वी आकलन सॉफ्टवेयर और डाटा आवश्यकता प्रशिक्षण की क्षेत्रीय बैठक'' में भाग लिया (4–6 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ मीनाक्षी शर्मा ने न्यू यॉर्क, यू एस ए में कॉर्डियोवैस्कुलर हेल्थ पार्टनर की दूसरी वार्षिक बैठक में भाग लिया (4–6 मार्च, 2019)।

चेन्नई स्थित आई सी एम आर राष्ट्रीय जानपदिक रोग विज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'ई' डॉ प्रभदीप कौर ने न्यू यार्क, यू एस ए में ''सेव लाइव्स कार्डियोवैस्कुलर हेल्थ पार्टनर'' बैठक में भाग लिया (5–6 मार्च, 2019)।

पुणे स्थित आई सी एम आर विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक 'जी' डॉ अतानु बासु ने माल्टा में ''आस्ट्रेलिया ग्रुप इंटरनेशनल बैठक'' में भाग लिया (5–7 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय के वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर.आर. गंगाखेडकर ने जेनेवा, स्विट्जरलैण्ड में **TruNAAT परीक्षण पर बैठक'' में भाग लिया (7–8 मार्च, 2019)।

नोएडा स्थित आई सी एम आर–राष्ट्रीय कैंसर निवारण और अनुसंधान संस्थान के पुनर्नियुक्त निदेशक प्रो. रवि मेहरोत्रा ने न्यू मेक्सिको में 'परियोजना EeCHo/ECHO इमरशन प्रशिक्षण MetaEcHO सम्मेलन, ECHO सुपर हब प्रशिक्षण' में भाग लिया (11–21 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ तनवीर कौर ने वशिंगटन डी सी, संयुक्त राज्य अमरीका में ''अंतर्राष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान की सहभागिता'' कार्यक्रम में भाग लिया (18–20 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के पुनर्नियुक्त वैज्ञानिक 'जी' डॉ आर.एस. शर्मा ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में UNDP/UNFPA/UNICEF/WHO विश्व बैंक के अन्तर्गत मानव प्रजनन में अनुसंधान विकास और शोध प्रशिक्षण के विशेष कार्यक्रम की नीति एवं समन्वयक समिति की 32वीं बैठक में भाग लिया (20–21 मार्च, 2019)।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ कामिनी वालिया ने जेनेवा, स्विट्ज़रलैण्ड में *''इन विट्रो* डायग्नोस्टिक्स डब्ल्यू एच ओ के स्ट्रेटजिक'' विशेषज्ञ सलाहकार समूह (SAGE IVD की बैठक में भाग लिया (18–22 मार्च, 2019)।

पॉडिचेरी स्थित आई सी एम आर रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ पी. जम्बूलिंगम ने एक्करा, घाना में ''8th DOLF तकनीकी सलाहकार समूह'' की बैठक में भाग लिया (25–28 मार्च, 2019)।

आई सी एम आर के प्रकाशनों की सूची इसकी वेवसाइट www.icmr.nic.in पर उपलब्ध है। आई सी एम आर के प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल ऑर्डर भेजें। डाक व्यय अलग होगा। चेक अथवा मनीऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।

दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228), फैक्स -91-11-26588662 ई मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in

सम्पर्क व्यक्ति : डॉ नीरज टण्डन, वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना

नियतकालिक प्रकाशन (पीरियाडिकल)

दि इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर) (मासिक)

वार्षिक ग्राहकों के लिए मूल्य 4000/- रुपये | प्रति कॉपी मूल्य 400/-रुपये

'इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in और www.ijmr.org.in पर उपलब्ध है

'आई सी एम आर पत्रिका' भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा, श्रीमती सरिता नेगी

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87